प्रेस विज्ञाप्ति

अपशिष्ट से सम्पदा सृजन पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद एवं भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान द्वारा कृषि विज्ञान केंद्र, शिकोहपुर में दिनांक 27.10.2016 को अपशिष्ट से संपदा सृजन पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस अवसर पर माननीय श्री सुदर्शन भगत जी, राज्य मंत्री- कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, मुख्य अतिथि थे। यह कार्यक्रम भारत सरकार द्वारा चलाए जा रहे स्वच्छ भारत मिशन के अंतर्गत आयोजित किया गया। इस अवसर पर माननीय मुख्य अतिथि श्री सुदर्शन भगत जी तथा अन्य उपस्थित गणमान्य व्यक्ति, श्री छबिलेंद्र राऊल, अपर सचिव (डेयर) एवं सचिव, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, श्री एस.के. सिंह, अपर सचिव एवं वित्त सलाहकार, डॉ. जे.एस. संधू, उपमहानिदेशक (फसल विज्ञान) भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान की निदेशक डॉ. (श्रीमती) रविन्द्र कौर, डॉ. जे.पी. शर्मा (संयुक्त निदेशक प्रसार), डॉ. एस.पी. किमोथी, सहायक महानिदेशक, डेयर/ भा.कृ.अ.प. एवं अन्य वरिष्ठ वैज्ञानिक गण भी उपस्थित थे। उपरोक्त सभी अतिथियों एवं गणमान्य व्यक्तियों ने प्रक्षेत्र भ्रमण के दौरान स्वच्छता अभियान कार्यक्रम का शुभारम्भ ग्राम शिकोहपुर में किया गया जिसमे स्कूल के विद्यार्थियों ने भी भाग लिया।

मुख्य अतिथि द्वारा इस अवसर पर आयोजित कृषि प्रदर्शनी का भी उद्घाटन एवं अवलोकन तथा प्रदर्शनी में प्रदर्शित तकनीकों की सराहना की जिसमें किसानों ने बढ़चढ़ कर भाग लिया। इस प्रदर्शनी में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के विभिन्न संस्थानों द्वारा प्रदर्शित तकनीकों जैसे - त्वरित कम्पोस्टिंग, पशु खाद्य ब्लाक मशीन, सिंचाई आपूर्ति और सुरक्षित खाद्य उत्पादन हेतु पर्यावरण अनुकूल अपशिष्ट जल उपचार(भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली), जैव अवशिष्ट प्रबंधन द्वारा अपशिष्ट से संपदा (भारतीय मृदा विज्ञान संस्थान, भोपाल), अपशिष्ट से जैव उर्जा उत्पादन तकनीक (केंद्रीय कृषि अभियांत्रिकी संस्थान, भोपाल), लाख आधारित लकड़ी वार्निश उत्पाद तकनिकी (भारतीय प्राकृतिक गोंद एवं रेजिन संस्थान, रांची), अधिक ताप से ठण्ड सहनशीलता वाले जय गोपाल वर्मीकल्चर तकनीक (भारतीय पशुचिकित्सा अनुसंधान संस्थान, इज्जतनगर, बरेली), प्रॉन मछली कोशिका अपशिष्ट द्वारा काईटिन, चिटोसेन एवं ग्लुकोमाइन हाइड्रोक्लोराइड का उत्पादन (केंद्रीय मत्स्य तकनीकी संस्थान, कोचीन) एवं डेरी अपशिष्ट का मूल्य संवर्धन (भारतीय डेयरी अनुसंधान संस्थान, करनाल) आदि विषयों पर कृषि क्षेत्र की प्रौद्योगिकीयों को प्रदर्शित किया गया।

डॉ. (श्रीमती) रविन्द्र कौर ने मुख्य अतिथि माननीय श्री सुदर्शन भगत जी, राज्य कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री, भारत सरकार एवं परिषद् के अन्य वरिष्ठ अधिकारीयों का स्वागत किया, एवं अपने स्वागत भाषण में देश से प्रतिदिन निकलने वाले लगभग 85000 टन जैविक कचरे व उससे होने वाली महामारियां, वातावरण प्रदुषण व जलवायु प्रदर्शन पर प्रकाश डाला व किस प्रकार भारतीय कृषि अनुसन्धान परिषद् द्वारा निर्मित तकनीकों से ऐसे अवशेषों का प्रबंधन कर उनसे प्रति वर्ष लगभग 315 करोड़ राशी के उर्वरकों की बचत की जा सकती है, की भी जानकारी दी। कार्यक्रम में मंत्री जी ने भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान के प्रकाशनों (त्वरित कंपोस्ट तकनीक; पूसा कंपोस्ट कल्चर द्वारा फसल अवशेषों का समृद्ध कंपोस्ट में रूपांतरण आदि) का विमोचन किया। गांव में जागरूकता फैलाने के लिये भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान के छात्रों ने एक नुक्कड़ नाटक ''घर का कूड़ा, खेत का सोना'' का मंचन किया।

मुख्य अतिथि माननीय राज्य कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री श्री सुदर्शन भगत जी ने अपने अध्यक्षीय भाषण में 16 से 31 अक्टूबर तक चलने वाले स्वच्छता पखवाड़े के दौरान सभी पंचायतों, ग्राम वासियों को स्वच्छता के प्रति सजग किया, साथ-ही-साथ रसोई से लेकर ऑफिस तक, खेत से लेकर खलिहान तक, गांव से लेकर शहर तक तथा फसल कटाई के बाद बचा कृषि व्यर्थ (अवशेष) जैसे पुआल, भूसा, फूल, पत्ते, घास, सब्जियाँ आदि के अवशेषों एवं पशु मल जैसे गाय, भैंस, मुर्गी, मछली तथा रसोई के हरे कचरे को खाद के रूप में परिवर्तित करके घर के कचरे को खेत में सोना उपजाने वाली खाद में बदलकर अपनी आय में वृद्धि कर सकते हैं। इसके अलावा यह भी आग्रह किया कि फसलों के अवशेषों को कदापि नहीं जलाना चाहिए। इससे मृदा उर्वरता में ह्रास तथा वातावरण प्रदूषित होता है। इसका उचित प्रबंधन करके खाद तैयार कर पेड़ पौधों के उपयोग में ला सकते हैं।

राज्य कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री श्री सुदर्शन भगत जी ने अपने अध्यक्षीय भाषण में भारतीय कृषि अनुसन्धान संस्थान की पर्यावरण अनुकूलित अपशिष्ट जल उपचार तकनीक के विषय में भी प्रकाश डालते हुए तरल अपशिष्टों को ऐसी तकनीकों से उपचारित कर सिंचाई आपूर्ति एवं सुरक्षित खाद्य उत्पादन हेतु उपयोग में लेने की भी सलाह किसानों से विस्तार में चर्चा की।

संगोष्ठी के दौरान उपस्थित गणमान्य व्यक्तियों डॉ. जे.एस. संधू, उपमहानिदेशक (फसल विज्ञान), श्री छबिलेंद्र राऊल, अपर सचिव (डेयर) एवं सचिव, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद)

श्री एस.के. सिंह, अपर सचिव एवं वित्त सलाहकार, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद ने अपशिष्ट से संपदा सृजन से संबंधित अपने-अपने विचार व्यक्त किए।

इस कार्यक्रम के दौरान कृषक एवं वैज्ञानिक संगोष्ठी का भी आयोजन किया गया, जिसमें भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली एवं अन्य संस्थानों से आए कृषि वैज्ञानिकों द्वारा कृषि एवं पशुपालन संबंधित समस्याओं का समाधान किया गया। इस दौरान गोष्ठी में आए प्रगतिशील किसानों - श्री कृष्ण कौशिक, गांव मौजाबाद; श्री योगेश, गांव सांपका; श्री दरयाव सिंह, गांव सकतपुर एवं श्री भारत भूषण त्यागी, गांव बेहटा द्वारा वर्मीकंपोस्ट, बायोगैस, अजोला एवं जैविक खेती पर अपना अनुभव साझा किये । संगोष्ठी की अध्यक्षता डॉ. जे.पी. शर्मा संयुक्त निदेशक (प्रसार), भा.कृ.अ.संस्थान ने की। इस संगोष्ठी में गुड़गांव, मेवात, महेंद्रगढ़, रेवाड़ी आदि जिलों से आए लगभग 350 कृषक एवं कृषक महिलाओं ने भाग लिया। कार्यक्रम के अंत में डॉ. एस.पी. किमोथी, सहायक महानिदेशक भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (समन्वय एवं नोडल अधिकारी, स्वच्छता मिशन) द्वारा इस कार्यक्रम में आए सभी गणमान्य अतिथियों का धन्यवाद किया और आभार प्रकट किया।